वही कागज़ वही कलम
नया मैं

अतीन विजय व्यास

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Atin Vijay Vyas 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-566-6

Cover Design: Aman Sharma
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: July 2025

मित्रों

व्यवसाय से टेक्सटाइल इंजीनियर और मिजाज़ से शायर श्री अतिन विजय की २०२१ में प्रकाशित पुस्तक ‘‘कागज़ कलम और मैं" के पश्चात आज जब इन्ही की दूसरी पुस्तक ‘‘वही काग़ज़ वही कलम नया मैं" प्रकाशित हो रही है तो बेहद प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जहां तक मैंने इन्हें जाना है इन्होंने 50 वर्ष की आयु के पश्चात लेखन शुरू किया और अनवरत अपनी लेखनी में सुधार किया और न केवल इसे अभिरुचि के समान जिया अपितु एक उत्तरदायित्व की भांति भी पूर्ण किया है। उत्तरदायित्व स्वयं का, अपनी भावनाओं का, अपने वास्तविक मैं से !

इनकी कविताओं में आपको अपनी प्रेयसी के लिए अप्रतिम प्रशंसा के कसीदे मिलेंगे! यह जब उसके रूप का बखान करते हैं तो बेहद सरल शब्दों में उसे नभ की ऊंचाई तक पहुंचाते हैं, लेकिन सतर्कता से खुद को भी उसके आसपास ही रखते हैं यानी यह शायर प्रेम का आग्रह तो करता है किंतु स्वयं के स्वाभिमान का भी पूर्ण ध्यान रखता है! यह बड़े जिद्दी शायर हैं, इनकी कई कविताओं में आपको वह झलक दिखाई देगी- जैसे ये कहते हैं की

"मेरी इजाज़त से तू महबूबा है मेरी, इसे गुस्ताखी न समझ

तेरा तुझ पर छोड़ा तू चाहे, यह समझ के वह समझ"

यह कवि विवश कवि नहीं है यह कहता है कि - "आज दोस्ती से ज़रा आगे नहीं बढ़ना तुझको

कल यही जो मैं कह दूँ, बहुत दुखेगा तुझको"

इनकी एक रचना "शौंक" के चंद शेर इनकी सोच और इनकी जीवन शैली को कुछ यूं बयां करते है

एक दिन तो मिट जाऊंगा मैं,

आज से जीना छोड़ दूं क्या

क्योंकि घर मेरा मेरे दिल से छोटा है

घर में मेहमान बुलाना छोड़ दूं क्या

क्योंकि तुझ पर कहे शेर तुझे समझे ही नहीं

मैं तुझ पर नयी गजल कहना छोड़ दूं क्या

इनकी कविताओं में आपको राजनैतिक झलक भी मिलेगी, इनमें प्रयुक्त शब्दों का एहतियात इनकी लेखनी की प्रौढ़ता को दर्शाता है और शरारत को भी, यह लिखते हैं कि

"जो जहाँ जैसे कहे, वैसे पूजा कर लेता हूं मैं

खुदा तो फिर अपना है, रहनुमा खुश हो जाता है"

आपको इस पुस्तक में प्रेम मिलेगा जीवन का फ़लसफ़ा मिलेगा, संबंध मिलेंगे, मित्र मिलेंगे और मिलेगा सुकून…

पढ़िए और नए अतिन की नई यात्रा में उनके सहयात्री बनिए,

शुभकामनाएं

कवियुगल- अनामिका जैन अम्बर

सौरभ जैन सुमन

मेरठ

दोस्तों

हर दौर में शायरी के आसमान पर कहीं न कहीं नए सितारे उभरते और जगमगाते रहे हैं,जिनकी तखलिकी सलाहियतों से काएनाते अदब,में नए उजालों का इज़ाफ़ा होता रहा है,

मेरे सामने बड़ौदा (गुजरात) के शायर अतिन व्यास के कुछ कलाम हैं जिसके हर मिसरे में उनके दिल के जज़्बात हैं जो उनकी सादगी,शराफ़त, और दयानतदारी की तस्वीरें दिखा रहे हैं,

ज़्यादातर नसरी नज्मों पर मुश्तमिल है, इसके बावजूद उनका लहजा न सिर्फ अपनी एक अलग पहेचान का एहसास कराता है बल्कि आम बोलचाल के लफ़्ज़ों को शायरी में ढालकर समाज की नाहमवारियों के ख़िलाफ़ अपने एहतिजाज को बलंद भी करता है, अपने जज़्बात,अपने एहसास,और अपनी महेसुसात को अलग अंदाज़ में पेश करने का ये हुनर कारी (पढ़ने वाला) को हैरत में डाल देता है,

वैसे तो हर इंसान में कुछ न कुछ कमज़ोरियाँ हो सकती है मगर इसके बरअक्स (विपरीत)अतिन व्यास अपनी घुन में मग्न खूब से ख़ूबतर कि जुस्तजू में न सिर्फ़ सरगरदा है, बल्कि अपने शेअरी सफर के रास्ते के नसेबो फराज से बेख़ौफ़ खुद से बेनियाज़ अदब के बेहरे बेकरां में एहसासों फिक्र के मोती तलाश करके तखयुलात की वादियों में अपनी तखलीक का ताजमहल तामीर कर रहे है,ये उनकी जुरअते रिंदाना भी है,और दीवानगी भी

आरिफ़ शेख़

बड़ौदा,गुजरात

आपस की बात

प्रिय मित्रों-- नमस्कार

माँ सरस्वती की असीम कृपा से, मैं आपके समक्ष अपने दूसरे काव्य संग्रह के साथ उपस्थित हो रहा हूं !

सन 2021 में पहली प्रकाशित पुस्तक कागज कलम और में के बाद ,जिंदगी में कई नए मोड़ आए ,कुछ बेहद खूबसूरत तो कुछ कई प्रेरणारस्पर्द ,कुछ कभी ना भूलने वाले तो कुछ कभी ना भुलाने वाले ,कुछ पूरबहार रास्ते तो चंद वीरान पगडंडिया , कुछ भ्रमित करने वाले दोराहे तो कुछ मददगार बाहें फैलाए चौराहे ,कुछ आंखें चौंधयाती रोशनियां तो कई रास्ते दिखलाती बिजलियां ,यारों के साथ मस्तियां तो कहीं हालातो की सिसकिया,कुछ दोस्त होते रिश्ते तो कुछ रिश्ते बनाते दोस्त ,सभी ने कहीं न कहीं मेरे कवि मन को कुछ ऐसा छुआ की हर छुअन ,हर एहसास एक नई काव्य रचना होती गई और शब्दों की बूंदे,वाक्य की लहर में बदल काव्य की मीठी नदी में परिवर्तित चली गई !

अपनी लेखनी के इन 6-7 सालों में, मैंनेअपनी लेखनी को सँवरते,निखरते,बिखरते ,सँभलते देखा है और आज जब अपनी पुरानी रचनाओं को पढ़ता हूँ और उन्हें कई जगहों पर कच्चा पाता हूँ तो मेरा दिल और मेरे नैन कृतज्ञता से भर उठते हैं ,मेरे उन अज़ीज़ो के लिए जिन्होंने मेरी हर कदम पर आज तक हौसला आफ़ज़ायी की ..शुक्रिया!

कुछ प्यारे लोग ऐसे भी चले आये ज़िन्दगी में जिन्होंने खुद अधिकार ले लिया मुझे खुश रखने का, स्वस्थ रखने का, मेरी परेशानिया मेरे बगैर कहे समझ लेने का और ये विश्वाश देने का की वो है… ,

शब्दकोष की अपनी मजबूरिया है, जो इनसे मिला उसका शब्दों में उल्लेख मुश्किल है, नत मस्तक हो विनीत भाव से अपना आभार प्रकट करता हूँ।

दिसंबर 2018 में जब मैंने पहली दो पंक्तियां लिखी थी

“गीली आंखों ने अद्भुत नजारा देखा है

त्यौहार है आज बिटिया ने घर सजाया है “

तब यह कहां सोचा था, दिल और दिमाग की रगे, कलम को इतना साथ देंगी की किसी दिन यह सिलसिला 200 के करीब कविताओं में बदल जाएगा! आपको किताब नज़्र करते हुए मैं दिल से आभार प्रकट करता हूँ और नतमस्तक हूँ, आशीर्वाद चाहता हूँ मेरे पिता श्री विजय चंद्र रामगोपाल जी व्यास, माता प्रतिभा जी का जो मुझे इस खूबसूरत दुनिया में लाए ,जहां मेरे इतने चाहने वाले हैं की मैं परस्पर उन्हें उतना प्यार लौटा भी नहीं पाता!

आभारी हूँ मेरे परिवार के साहित्य जगत के नामी गिरामी वरिष्ठ स्वर्गीय श्री श्याम व्यास जी ,श्री सनत व्यास जी ,स्वर्गीय श्रीमती आशा कोटिया जी वह मेरी साहित्य प्रेमी नानी जी स्वर्गीय चंद्रकांता जोशी जी का जिन्होंने कहीं न कहीं ,मुझ में एक चिंगारी पहचानी थी ,मैं ही वक्त रहते उसे हवा ना दे सका। अंत में मेरे बच्चों दामिनी मोहित का प्यार और साथ विशेष उल्लेख का हक रखता है!

ईश्वर ने दी मुझे यदि आशिकाना मिज़ाज दिया तो मेहबूबा भी ऐसी की जिसका रोज़ नया रूप ,नया अंदाज… लेकिन मर्म वैसे का वैसा , ३६ बरस से रोज नयी लेकिन फिर भी वही की वही, मैं शायर के सिवा कुछ और हो क्या सकता था-- उसकी शान में कहता हूँ की,

जान तुझे कह नहीं सकता, वह तो एक दिन जाएगी

तू मान है मेरा, मेरी याद में मुझसे पहले याद आएगी

मेरी हमसफ़र --प्रिय यशश्री…

मित्रों नतमस्तक हो आपके हवाले कर रहा हूँ—

वही कागज वही कलम नया मैं

आपका अपना

अतिन विजय व्यास

अनुक्रमणिका

आज़ाद ख्याल 1

सफ़र 3

मिलन.. 4

अपनी कहानी 6

पहेली.. 7

वादा.. 8

सुर्खरू.. 9

उसका रूबाब.. 10

आशिक.. 12

मेरी वो.. 13

मेरी मर्जी.. 15

छिछोरा.. 17

तिश्नगी.. 18

आज और कल 20

तेरी मर्जी 21

मेरी आदतें.. 22

हासिल 23

मेहबूबा 25
एकतरफ़ा.. 26
दीवाना 27
गुस्ताखी.. 28
उम्मीद 29
मेरी आवाज़ सुनो 30
ख्वाहिश 31
नई समझ.. 32
बगुले भगत.. 33
आज और कल 34
दर्पण 36
झूठ सच.. 37
क्यूँ की.. 38
समझौता 40
बगुले भगत -2.0 41
उलझन 42
भूल गया.. 43
एतबार.. 45
झंझट.. 46
खलनायक.. 47

रिश्तो की लड़िया 48

खुशी 50

चक्कर 53

पहचान 56

अमली अवतार 57

जानवर और इंसान - आज और कल 58

पंगा @ 100% 60

तलाश 63

चौबीस- पच्चीस (नया साल) 64

जब तलक, तब तलक 66

खरा खरा 69

शौक़ 71

तेरी मोहब्बत 72

नया मैं 73

आज़ाद ख्याल

जब दिल की सुने दिल कुछ और सुनाई नहीं देता
आंखों को कुछ उस एक के सिवा दिखाई नहीं देता

रोग मोहब्बत का लगाए से लगाया नहीं जाता
जिसे लग जाए उन्हें फिर समझाया नहीं जाता

फितरत है जवां दिल की कहीं भी अटक जाता
तरकश में रखने को तो तीर बनाया नहीं जाता

खुदा की राह में जो है खुद को भुला देता
खुदाई में मानो उसे फिर कुछ नहीं भाता

इम्तिहान तो कड़े से कड़ा लेना मेरे दाता
चमकता नहीं सोना जो तपाया नहीं जाता

हो औलाद लायक तो बुढ़ापा सुधर जाता
हो औलाद नालायक तो बुढ़ापा नहीं आता

बे सुवादी है ज़िन्दगी जब तक
मोहब्बत का तड़का नहीं पड़ता
सख्त परहेज नफरतों से करो
ऊपर में कुछ साथ नहीं जाता

एक हद से ज्यादा तो किसी को मनाया नहीं जाता
जो हथेली पर लिए हो दिल उसे तरसाया नहीं जाता

सफ़र

दिल है तो धड़केगा.........धड़कता है
धड़कता है तो मचलेगा....मचलता है
मचल कर दिलबर खोजेगा
मिला दिलबर तो महकेगा
महक से फिर यह बहकेगा
बहकता दिल.. कहाँ बस में
यह ख़ुद के राज़ खोलेगा
हद में रही जुबां गर तो
निकल आँखों से दौड़ेगा
जो आँखें मूँद भी ली तो
शक्ल फिर और चमकेगी
मुतासिर इस उजाले से
रौशन सारा जहां होगा
रौशन समा के बाशिंदे
कहाँ फिर हद में रहते हैं
हर ज़र्रे में इनका महबूब
तो यह महबूब में रहते है

दिल है तो धड़केगा, धड़कता है...
धड़कता है तो मचलेगा....मचलता है

मिलन

तू बस तू रह कर मिलने आना सनम
मैं बस मैं रहकर आ जाऊंगा सनम

तेरा मन मेरे मन का प्रतिबिम्ब सनम
रुखसार तेरे में मेरे हक की धूप सनम

तेरी पेशानी पर लिखी मेरी तकदीर सनम
तेरी आंखों में बैठे मेरे कई मुखबिर सनम

तू बस तू रह कर मिलने आना सनम
मैं बस मैं रहकर आ जाऊंगा सनम

ना लाली ना तो इत्र कोई लगाना तुम
कसम है कोई सिंगार नहीं लगाना तुम

यह फिजा महकती है तुझसे जानम
यह आशिक बहकता है इससे जानम

तेरे हुस्नो जमाल की तपिश से
मेरा इमान पिघलता है जानम

तेरी आवाज में बसी जो कोयल सनम
बोले तो ग़ज़ल हो मोहब्बत की सनम

तू बस तू रह कर मिलने आना सनम
मैं बस मैं रहकर आ जाऊंगा सनम

तू तेरे मयार पर क़ायम रहना सनम
तुझे तेरी क़ीमत की खबर नहीं सनम
जब तेरी हद्दे मयार तक पहुंचूंगा सनम
सांसों से खबर तुझे पहुँचा दूंगा सनम
तू बस तू रह कर मिलने आना सनम
मैं बस मैं रहकर आ जाऊंगा सनम

अपनी कहानी

कितनी सादी सी है ये अपनी कहानी
होठों पर मुस्कान औरआंखों में पानी

कितना आसान है ये सफर अपना
हाथों में हाथ औरआंखों में सपना

कितने आराम से सफर तय कर रहे हैं
हर पड़ाव को मानो मंजिल कर रहे हैं

कितने हसीन है ये नजारे सफर के
दिलों में हमारे ये सब घर कर रहे हैं

कितनी मेहरबान ये कुदरत भी हम पर
हर मौसम को मानो बरसात कर रही हैं

कितनी इनायत उस खुदा की है हम पर
सफर में सभी को हम संग कर रहे हैं

मोहब्बत हमें कितनी रास आ रही है
गुजरती हर सांस और पास ला रही है

पहेली

तू मेरा हमसाया है या कि फिर मैं तेरा
ये सवाल फिर सवाल ही रहे तो अच्छा

तुझे पाने को जिया या तुझे पाकर जिया
यह पहेली कोई और सुलझाये तो अच्छा

सफर है ज़िन्दगी इस सफर को चलने दो
सफर किसी मंज़िल को न पहुंचे तो अच्छा

तेरी नज़रे तपिश से है लहू में रवानी अब तक
मैं भी तेरे यूं किसी काम आ जाऊं तो अच्छा

बहुत सुना है होते हैं सुबह सुबह के सपने सच्चे
तू ख्वाब में आए और सुबह हो जाए तो अच्छा

बहुत मशहूर है तेरे नाम से बाशिंदे तेरी गली के
अतिन भी कुछ यूं ही मशहूर हो जाए तो अच्छा

वादा

हर एक दफे कलम मेरी तुझे चाँद लिखेगी
एक दफे तेरा नूर मुझ पर तू बरसा तो सही

मेरी आंखें तुझे प्यार के समंदर सी मिलेगी
तू दरिया तेरी नज़रो का इधर मोड तो सही

मैं ही क्या ये दुनिया तुझे जन्नतें हूर कहेगी
तेरा हुस्न मेरे लफ्जों से जरा सवारूँ तो सही

तेरे हुस्न के चर्चे तुझे हर एक कूचे में मिलेंगे
शायर बड़ा मशहूर हूँ कही ये मान तो सही

तारीख में नाम हमारा भी यह दुनिया लिखेगी
अपनी जोड़ी का ऐलान खुलकर कर तो सही

तेरे हुस्न के आगे कही कोई हुस्ना न टिकेगी
तुझे शिद्दत से संवारूँगा, कहीं मिल तो सही

सुर्ख़रू

मैंने तो सिर्फ़ मोहब्बत माँगी थी तुमसे
क्या सोचकर तूने ग़ैरो से मशविरा माँगा

मैं जैसा भी हूँ ख़ुद को क़बूल करता हूँ
ख़ामख़ा क्यों मेरी ख़ामियाँ गिनाती हो

छोड़ चुका हूँ कबसे ज़िद तुझे पाने की
अब क्यूँ ही मेरी होने को रट लगाती हो

अब जब हो चली है तन्हाई से मोहब्बत
तब क्यूँ अब मेरे गिर्द मजमे लगाती हो

जब जला दी नाकाम इश्क़ की किताब
तब लगाया मेरी सलाहियतों का हिसाब

तुझसे हटी नज़र हुआ खुद से रूबरू
तेरे बिला भी है अतिन खासा सुर्खरू

उसका रूबाब

चांद फलक से मुझही को देखे
मैं चांदनी मे बस उसे निहारूं

फलक झुका है मेरे सर पर
है मेरा सर उसके दामन पर

हुई सहर की कोई रस्ता देखूँ
मैं बस उसका ही रस्ता देखूँ

चले हवा कि कुछ मौज में जी लूं
मैं उसकी उड़ती जुल्फों से खेलू

टिम टिम जैसे करते है तारे
मैंने वैसे उसको किए इशारे

खुले मयकदे कि मैं उसको भूलूं
मैं मदहोश उसी की याद में झूमू

कली चटकी खिली फुलवारी
मैंने फिर उसकी नजर उतारी

तारे कहे ,आ तेरा भाग्य संवारे

भर मुट्ठी मैने सब उसपे उवारे

आयी बरसात कि वह आये याद

जो भुला, अतिन तो करेगा याद

आशिक

मेरी आंखों में वो जाने क्या-क्या तलाशने लगा है
वह दोस्त मेरा अब बेसब्रा आशिक़ होने लगा है

अब मेरे माथे को भी वह बोसा नवाज़ने लगा है
सर से पैर तक हूँ उस ही की यह जताने लगा है

वह ना मिले तो बहुत ही तन्हा तन्हा लगता है
वह जान था मेरी अब जिंदगानी होने लगा है

वह रोज रोज नए-नए वादे क्यूँ करने लगा है
अब जाने किस बात का शक करने लगा है

वह मुझसे कभी अब नाराज भी होने लगा है
प्यार अब इश्क़ में यूं तब्दील होने लगा है

जकड़कर वह मुझे बाहों में समेटने लगा है
उसे शक है मुझे कोई और भी चाहने लगा है

वह इम्तिहान मेरा कुछ यूं लेने लगा है
हर काम मुझसे पूछ कर करने लगा है

लग गले होले से पीठ थपकाने लगा है
दरिया से ये रिश्ता समंदर होने लगा है

मेरी वो

एक बार पड़ी तुझ पर जो मेरी नजर
बस फिर बेरोजगार हो गई मेरी नजर

तुझे देखा तो दिल में उठी ऐसी लहर
खारी आंखों में समा आयी मीठी नहर

करवटें बदलते बदलते हुई मेरी सहर
बतला यह इश्क है या की कोई क़हर

क्या जरूरी चाहे मुझे और प्यार भी कर
अच्छा लगता हूं इतना दिलासा तो कर

तू जन्नते हूर है मैंने ही दी तुझे यह खबर
मेरे ही दायरे से तू बाहर है चारों पहर?

रानी कहा है तुझे वजीरों सा काम न कर
इश्क है इश्क रहने दे इसे शतरंज न कर

मोहब्बत जिंदाबाद लिखूंगा हर चौराहे पर
गर तूने छोड़ा न मेरा साथ किसी दोराहे पर

बे असर ही हो जाए तेरी निगाहों के नश्तर
मोहब्बत को मेरी जां इतनी भी दुश्वार न कर

आशिक हूं तेरा मुझे नाहक बदनाम ना कर
नाम जुड़े है अपने तू इसका ख्याल तो कर

हो गए पुरे बर्बाद हम तो शरीफ रहकर
कर दे मुझे आबाद जरा बदनाम करके

साँस चल रही है सोचा तुझे कर दूँ खबर
जफ़ा पर तेरी तू इतना भी गुमान ना कर

न तू आती है न आती है तेरी कोई खबर
ज़रूर कहीं तो खुद रही है मेरी कबर

हुस्न ने बरसाया होगा बेवफाई का क़हर
तभी इस जहां में ईज़ाद हुआ होगा ज़हर

तू जन्नते हूर है मैंने ही दी तुझे यह खबर
मेरे ही दायरे से तू बाहर है चारों पहर?

मेरी मर्जी

तुझे जब चाँहू, जहां चाँहू , जैसे चाँहू मै चाहूँगा
एक तरफा इश्क हो तो हो, लुत्फ पूरा उठाऊंगा

सुर भी मेरा राग भी मेरा, मेरा प्रेम गीत गाऊंगा
मेरी मोहब्बत मेरा नगमा खुद ही लुत्फ़ उठाऊंगा

दमकते तेरे माथे पर एक बिंदी बड़ी लगाऊंगा
निचले होंठ से जरा नीचे एक छोटा तिल लगाऊंगा
तसव्वुर में क्या कर लोगी, तुम्हें जैसे चाँहू सजाऊंगा

सुरमा गहरा लगाए तुम ,
जुल्फों में खुद को समेटेतुम
ख़्वाब में मेरे दस्तक दो
तो नजरे जरा चुराना तुम
ख्वाब और उसमें ग़श आना
मैं तो सह न पाऊँगा

कुछ प्यास लिए तुम आओ तो,
कुछ आस लिए तुम आओ तो
आँखो से प्यास बुझाऊंगा ,
हाथों से तुम्हें खिलाऊंगा

तेरी दावत है मेरे ख्वाबों में

मेजबानी पूरी निभाऊँगा

कैसे बीते तन्हा वह दिन ,

मिलकर तुम्हें बताऊंगा

आज रात के ख्वाब में

अफसाना पूरा सुनाऊँगा

जब चाहूं जहां चाहूं जैसे चाहूं तुम्हें चाहूंगा

एक तरफा इश्क हो तो हो लुत्फ़ पूरा उठाऊंगा

छिछोरा

बड़ी कातिल हसीना हो तुम
मुझे घायल करोगी क्या ?

आंखे मयकदा है तुम्हारी
मुझे मदहोश करोगी क्या?

पंखुड़ी गुलाब है ये होठ तुम्हारे
थोड़ा गुलकंद चखाओगी क्या ?

जिसे मिलोगी तकदीर से मिलोगी
मेरी तकदीर चमकाओगी क्या ?

अदाएं कातिलाना है तुम्हारी
मेरा कत्ल नहीं करोगी क्या ?

तेरा दीवाना हूं यह सब जानते हैं
मुझे कहीं महबूब बताएगी क्या ?

जहां तलक तू कहे मै साथ चलता हूं
कही तो कोई मंजिल बताएगी क्या ?

तू मुस्कुरा दे तो नज़्म यही बंद करूँ
अतिन कितने शेर कहे ,बताएगी क्या?

तिश्नगी

तुझसे पहले तुझसे पहचान है मेरी
तू ही तो है ख्वाबों की ताबीर मेरी

मैं तेरा फिक्रमंद हूं बात ये तू मान मेरी
तुझसे छुप कर तुझ में रहती है जां मेरी

तू यू नाराज ना हो तुझे कसम है मेरी
तेरी जां से पहले निकल जाएगी जां मेरी

तेरी आंखों के समंदर मे है किश्ती मेरी
मेरी आँखो में कुछ है तो बस तिश्नगी तेरी

तेरी जुबान पर रखी है जिंदगी मेरी
मेरी ज़ुबा पर है फ़क़त इंतेज़ा मेरी

तेरे होठों पर रखी है बेख़ुदी मेरी
मेरे होठों पर मचलती हसरते मेरी

तेरे कदमों की आहट से चले धड़कनें मेरी
तू दूर ना जाना रुक जाएगी धड़कनें मेरी

कर दूं तेरे नाम तमाम जायदाद मेरी
शर्त है मुझे भी तू मान जायदाद तेरी

तेरे खबरी रखते हैं पूरी खबर मेरी
मुझ अकेले को पूरी है खबर तेरी

अखबार ना पढ़ना बुरी आदत है तेरी
छूट जाएगी कभी मरने की खबर मेरी

अनायास जो याद आ जाती है तेरी
कायनात बस वही सिमट जाती है मेरी

तेरी आंखों के समंदर मे है किश्ती मेरी
मेरी आँखो में कुछ है तो बस तिश्नगी तेरी

आज और कल

आज तो मुंह यूं मोड़ कर जा रही हो तुम
कल याद करोगी कभी पहचान थी मुझसे

आज मेरी सीरत तुझे काबिल नहीं लगती
कल इन्ही सिरत के सदको को तड़पोगी

आज मेरे वादे को अदाकारी कहे हो तुम
तमगे नवाज़ोगी इस रस्म ए वफ़ा को तुम

आज दोस्ती से जरा आगे नहीं बढ़ना तुझे
कल जो मैं यह कह दूं बहुत दुखेगा तुझे

माँगी है मोहब्बत तो खुशी खुशी हाँ कर दे
कल ना कहीं तू समंदर तेरे अश्क़ो से भर दे

आज मयस्सर हूँ तो नसीब तेरे का शुक्र मना
तेरे हाथ तेरा मुस्तक़बिल आकर मुझे गले लगा

तेरी मर्जी

तू मुझे सोच समझ कर जवाब देना, तेरी मर्जी
मैं तब तलक हां समझ लूं ,तो तुझे क्या दिक्कत

तू मुझे सोच समझ कर प्यार कर लेना, तेरी मर्जी
मैं तसव्वुर में तुझे जो छू लूं, तो तुझे क्या दिक्कत

तू मेरे हाथ से गुलाब ले ना ले, चल रही तेरी मर्जी
इसे तेरी जुल्फों में सजा दूं ,तो तुझे क्या दिक्कत

तू शायर चाहे न कोई शायरी, चल रही तेरी मर्जी
मैं तेरा हुस्न दिन रात बखानू,तो तुझे क्या दिक्कत

तू मुझे चुने ना चुने चल रही चल रही तेरी मर्जी
मैं भी दौड़ में रहू शामिल ,तो तुझे क्या दिक्कत

तू मुझे महबूब कहे न कहे, चल रही तेरी मर्जी
तुझे कही मेरा खुदा बता दूं ,तो तुझे क्या दिक्कत

तू मुझे दवा दे न दुआ , चल रही तेरी मर्जी
तेरा मरीज कहलाऊ , तो तुझे क्या दिक्कत

तू good morning कहे ना कहे, तेरी मर्जी
पुरी रात तुझे good evening कहूं, तो तुझे क्या दिक्कत

मेरी आदतें

इश्क है उसी से मगर प्यार बाँटता हूं
यही मेरी आदत उसे अच्छी नहीं लगती

उम्मीद उसकी मैं और उम्मीदें बँधाता हूं
यही मेरी आदत उसे अच्छी नहीं लगती

धड़कने उसी से पर अपने दिल की सुनता हूँ
यही मेरी आदत उसे अच्छी नहीं लगती

गुलाम हूँ उसी का पर हासिल जहां को हूँ
यही मेरी आदत उसे अच्छी नहीं लगती

दुश्मनों के साथ दोस्त भी माफ़ किए मैंने
यही मेरी आदत उसे अच्छी नहीं लगती

उसकी सोहबत से मुझे सब प्यारे लगते हैं
यही मेरी फितरत उसे अच्छी नहीं लगती

हासिल

गुलाब हमें भी है नसीब
लाल ना नहीं सफेद सही

क्यों करें शिकायत किसी से
ये दुनिया इतनी बुरी भी नहीं

मकाँ हमें भी है नसीब
महल ना सही ना सही
हम इसी को घर कहते हैं
जरूरते इतनी अधूरी भी नहीं

मोहब्बत हमें भी है नसीब
मशहूर ना सही ना सही
हम उसी को लैला कहते हैं
दीवाने हम भी कम नहीं

हसरतें हमें भी है नसीब
कुछ गलत कुछ सही
सभी अंजाम को पहुंचे
ख्वाहिशें ऐसीअधिरी भी नहीं

ख्वाब हमें भी है नसीब
कुछ रंगीन कुछ बैरंग सही
नींद हम पर भी है मेहरबान
बिछौना ऐसा तंग दिल भी नहीं

माँ तो सभी की एक सी है
हम एक से ना हो ना सही
दुआए बेहिसाब लुटाती है
खुदा इन से अलहदा नहीं

मेहबूबा

तू सजना सवरना जारी रख मेरी जान
अभी तेरे महबूब में बहुत प्यार बाकी है

मुझसे रूठना यूँ ही जारी रख मेरी जान
तेरे आशिक में अभी बहुत इश्क बाकी है

बाक़ी कोई अरमान ना रखना मेरी जान
अभी तो तेरे यार में बहुत हुनर बाकी है

तू रोज़ जारी कर नए सवाल मेरी जान
अभी तेरे यार में बहुत बाजीगरी बाकी है

क्यों आंखों में तेरे अश्क दिखे मेरी जान
अभी अपना बहुत हँसना हँसाना बाकी है

तू जीना यूँ ही बिंदास हर लम्हा मेरी जान
अभी तो गमों का मुझसे गुजरना बाकी है

नहीं यह आखरी शेर तेरे इश्क में मेरी जान
इस दीवाने के ज़हन में बहुत स्याही बाकी है

एकतरफ़ा

एकतरफ़ा मेरे चाहने से ,मयस्सर वह नहीं होगी
बेखबर नहीं था मैं ,वक्त फिर भी ज़ाया किया मैंने

एकतरफ़ा मेरे निभाने से यारियां लंबी नहीं होगी
मिले यारो से इशारे वक्त फिर भी जाया किया मैंने

एकतरफ़ा मेरे निभाने से, रिश्ते निभ नहीं सकते
अश्क़ो ने समझाया वक्त फिर भी जाया किया मैंने

एकतरफ़ा मेरे चाहने से कौम सब एक नहीं होती
काफिर कहलाया वक्त फिर भी जाया किया मैंने

फकत मेरे बेटा कहने से मैं उसका बाप नहीं होता
वो सीने से नहीं लगता वक्त यूं ही जाया किया मैंने

फकत मेरे गम में क्यों यह दुनिया गमजदा होगी
इसकी खुशियों में हो शामिल वक्त को पा लिया मैंने

एकतरफ़ा मेरे चाहने से ,यह मकां घर नहीं होता
एक हमनवा के साथ से मकां को घर किया मैंने.....

दीवाना

उसके शबाब का वो रुवाब , पल में दीवाना कर दे
ऐसा हुस्न ए बेहिसाब , मोमीन को काफिर कर दे

शायर की क्या बिसात उसका हुस्न बयां कर दे
कोई उसे मेरी आंखों में समाने की दुआ कर दे

ऐ हकीमे नज़र मेरा जरा सा एक काम कर दे
बने तो मेरी आंखों को जरा और गहरा कर दे

काले तिल के कहां बस में हम दीवानों की नजर
दिल कहे वज़ीरे आजम को उसका संत्री कर दे

वह जिस सूरत में मुझे अपना दिलदार कह दे
या खुदाया बस ठीक वही मेरा किरदार कर दे

उसकी मासूमियत मुझे कुछ ऐसा दीवाना कर दे
इल्जाम जो उसके सर सब के सब मेरे सर कर दे

उसके बदन की खुशबू कुछ ऐसी फ़िज़ा में महके
यह दीवाना कहे ए खुदाया तू मुझे ऐसा इत्र कर दे

उसके रोशन हुस्ने जमाल की हूरे तक मिसाल दे
गर मेरे मुकद्दर में है मोहब्बत तो यही बेमिसाल दे

गुस्ताखी

दिल देकर प्यार मांगा है इसे ग़ैर मुनासिब ना समझ
सांस लेने भर को मांगा है इसे गैर वाजिब न समझ

हूँ मैं नमाजी नहीं लेकिन तू मुझे काफिर न समझ
तेरे सजदे से कैसे उठू जरा मेरी मजबूरी तो समझ

नजरे हटती नहीं तेरे रुख से इस गुस्ताखी न समझ
तू तबीब ए आशिक़ है इस मरीज़ का मर्ज़ तो समझ

मेरी हसरते मेरी दुआए ज़रा तो तू गौर से समझ
मुझे कह दे तेरी खवाइश हुआ मैं मालामाल समझ

हाँ खून ही से लिखा है खत इसे गुस्ताखी न समझ
लज्जत पूरी चाहिए इश्क में मेरा नजरिया भी समझ

मेरी रज़ा से मेरी महबूबा है इसे गुस्ताखी न समझ
तेरा तुझ पर छोड़ा मैंने तू यह समझ के वह समझ

मेरी दोज़ख़ सी जिंदगी को तूने बना दी जन्नत
तुझे जमीं का करके वह लूटी पड़ी है जन्नत

उम्मीद

ताजा-ताजा ना कहा है उसने थोड़ा सब्र कर
अभी कहां किसी और को हां कहा है उसने

क्यों समझता है कि उसके लायक नहीं है तू
तेरे लायक होने को कुछ समय मांगा है उसने

तू समझता है तेरे आंसुओं का उसे मोल नहीं
रुमाल नहीं तकिया अश्कों से भिगोया है उसने

तू यूँ गम ज़दा है कि वह तेरे नसीब में नहीं
दुआ में रोज़ तुझे ही नसीब में मांगा है उसने

है जो तू परवाना तो रुवाब दिखाता है किसको
शमा होकर खुद को भी खूब जलाया है उसने

उसके बर्ताव को तो सरे आम खूब सुनाया तूने
तेरा सुलूक आईने तक को ना बताया उसने

धरती ,चांद तारों के वादे उससे खुद किए तूने
उसका इशारा समझ कुछ भी नहीं मांगा उसने

ताजा-ताजा न कहा है उसने
थोड़ा ठहर इंतजार तो कर

मेरी आवाज़ सुनो

चल तेरे कहने से माना मैं तेरे लायक नहीं
मेरे कहने से जरा तू मुझे आज़मा तो सही

सुना तेरा कहना कि कभी याद ना करोगी
तू निभाने को इसे कसम मेरी उठा तो सही

सुना तेरा ऐलान तेरा मुझ से नाता नहीं कोई
मल्लिका मेरी हो सर से ये ताज हटा तो सही

ख़ुद का दिल जलाती हो मुझे बदनाम करती हो
बदल जायेगा ये मिजाज तू प्यार से बुला तो सही

यह क्या शौक है तेरा क्यों रोज़ मजमा लगाती हो
आशिक़ कोई नहीं मेरे मुक़ाबिल तू ये मान तो सही

चल मत देना तू दिल तेरा ,तू मेरा दिल रख लेना
बदल देगा ये दिल तेरा एक बारआजमा तो सही

ख्वाहिश

मुझे तुम अच्छी लगी , मैंने बता दिया ख्याल
जरा सी इस बात पर तुमने मचा दिया बवाल

जमाने भर की दौलत है ,तुम्हारे सुनहरी बाल
लुटेरे ही लुटेरे हैं बना लो मुझको अपनी ढाल

मुझसे बेहतर की ख्वाहिश में बीतेंगे तेरे साल
मान मशवरा हाँ कह दे,अभी यहीं इसी हाल

मोहताज नहीं सवरने का ये तेरा हुस्न ए जमाल
एक नज़र मेरे भी शोक़ ए आशिक़ी पर डाल

ना दानिस्ता उड़ा देती मुझ पर कतरा ए गुलाल
होली ना मनाने का दिल में रहता नहीं मलाल

यही ख़ुदा की मर्जी अब हो भी ले विसाल
वफा में नहीं मिलेगी मुझसी कोई मिसाल

नई समझ

उसके नजरिये से जबसे देखा है खुद को
तबसे बेवफाई उसकी समझने लगा हूँ

नियत दोस्तों की जबसे समझने लगा हूँ
वजह बेरुखी की उनकी समझने लगा हूँ

मेरी दौलत की जब क़ीमत समझने लगा हूँ
तब रिश्तों के बदले रंग भी समझने लगा हूँ

जबसे जां से ज्यादा उसको चाहने लगा हूं
तबसे जुनून परवाने का समझने लगा हूँ

अपने आंसुओं की कीमत लगाने चला तो
औकात अपनी भी अब समझने लगा हूँ

क्यों बिखरे ये रिश्ते जब समझने चला तो
अहमियत सब्र की भी अब समझने लगा हूँ

आईने की औक़ात जबसे समझने लगा हूँ
तबसे खुदा की नज़र में सवरने चला हूँ

बगुले भगत

इजहारे महोब्बत तक न कर सके जो
मेरे टूटे दिल का सबब पूछते हैं वो

इंसान एक जात है नहीं जानते है जो
मेरे नाम से मेरी जात पहचानते है वो

मजबूर ओ मज़लूम से नज़रें चुराते है जो
मिले मुझसे तो जाने क्यों मुस्कुराते है वो

राह चलने का सलीका नहीं जानते है जो
क्यू उजड़ा ये अपना चमन पूछते है वो

माटी की ख़ुशबू नहीं पहचानते है जो
वतनपरस्ती का इत्र यहाँ बेचते है वो

कासिद है गुलाब महोब्बत का ना जाने जो
गुलकंद के फिर फ़ायदे हमें गिनवाए है वो

एक शेर सुनना तक नहीं जानते है जो
ग़ज़ल दर ग़ज़ल बस लिखे जा रहे है वो

आज और कल

आज तो फ़क़त मोहब्बतें समझने दो मुझे
कल कभी नफरतें भी समझ कर देखेंगे

आज तो वफ़ा ए जन्नत में जीने दो मुझे
कल कभी दोजखे जफ़ा समझ के देखेंगे

आज मये महोब्बत बेख़ुदी तलक पीने दो मुझे
कल होश में सही या ग़लत समझ कर देखेंगे

आज लबों पर नाम उसी का रखने दो मुझे
हुए कल बदनाम तो बदनामी समझ कर देखेंगे

आज बेतकल्लुफी से उससे मिलने दो मुझे
कल कहीं समझदारी भी समझ कर देखेंगे

आज हक़ से इजहारें इश्क़ करने दो मुझे
ना बनी बात तो मिन्नतें समझ कर देखेंगे

आज तो मेरी कारीगरी दिखाने दो मुझे
कल ज़हान की बाज़ीगरी समझ के देखेंगे

आज तो दरियादिली समंदर होने दो मेरी
कल कभी तंगदिली भी समझ के देखेंगे

आज सारी कायनात से प्यार जताने दो मुझे
कल अपना मज़हब भी समझ कर देखेंगे

आज तो आसमां तलक है दावेदारी मेरी
कल हुए सुपुर्दे खांक तो इसके आगे देखेंगे

आज ही सच है आज है ज़िंदगी ,आज जीने दो मुझे
कल यदि जो कल आया ,तो कल समझ के देखेंगे

दर्पण

जो देख रहा हूं वही लिख रहा हूँ मैं
फिर कैसे बकवास लिख रहा हूँ मैं

जो सुन रहा हूं वही सुना रहा हूँ मैं
फिर कैसे कुछ भी सुना रहा हूँ मैं

जैसा गा रहे हैं वैसा बजा रहा हूँ मैं
फिर कैसे यूँ बेसुरा बजा रहा हूँ मैं

इश्क तो संजीदा किए जा रहा हूँ मैं
फिर दीवाना क्यों कहा जा रहा हूँ मैं

जो बरता गया मुझसे वही बरत रहा हूँ मैं
कैसे बेशर्म और बदतमीज हो रहा हूँ मैं

जो रोज कतरा कतरा खर्च हो रहा हूं मैं
फिर कैसे रोज पूरा-पूरा बिक रहा हूं मैं

हर एक मजहब के इंसान से याराना मेरा
फिर कैसे काफिर हुआ ताहरूफ़ मेरा

राजा वजीर और सेनापति भी जब मेरा
फिर क्यों भगवान रोज खतरे में है मेरा

झूठ सच

झूठ पर झूठ कब तक लिखे
चलो कुछ सच्चा सच्चा लिखते हैं

बेवजह खुश कब तक दिखे
चलो कुछ रूठे रूठे दिखते हैं

मतलब भर से कब तक लोगों से मिले
बेमतलब भी कुछ लोगों से मिलते हैं

होश में रहकर क्या ही कर लिया दुनिया में
चलो कुछ दिन को तोअब बेखुदी में रहते हैं

जागे जागे रात को कब तक सोए हम
चलो अब दिन में घोड़े बेच कर सोते हैं

कब तक अपने अश्क यूं ही बर्बाद करें
इनकी कुछ तो कीमत लगा कर देखते हैं

खत्म हो गई टिकिटे जब तक हम पहुंचे
अपनी कुछ टिकिटे जारी करके देखते हैं

वह कहते हैं पैसा सब कुछ नहीं होता
सच ही होगा,चलो पैसा कमा कर देखते है

क्यूँ की

क्यूँ की एक दिन तो मिट जाऊँगा
मैं आज से जीना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की तेरे मिलने की कोई सुरत नहीं
मेरे दिल से तेरी मूरत निकाल दूँ क्या ..?

क्यूँ की तुझे ना कहने का सलिक़ा नहीं
मैं अदब से इंतजा करना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यू की नज़रें फिराना तेरी फ़ितरत ठहरीं
मैं तुझसे अँखियाँ लड़ाना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की अरसे से तुम मुस्काई नहीं
मैं तेरे ग़म में रोना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की ख़ुदा पर तूझे कोई ऐतबार नहीं
तूझे दुआ में उससे माँगना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की मेरे कहे शेर तूझे कही समझे ही नहीं
तुझ पर नयी ग़ज़ल कहना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की घर मेरा मेरे दिल से छोटा है
घर में मेहमान बुलाना छोड़ दूँ क्या ..?

क्यूँ की जान मैं तुम्हें जाँ से ज़्यादा चाहता हूँ
जिस माँ से मिली जान,उसे छोड़ दूँ क़्या..?

समझौता

इस दौर में जिंदा रहने को यह भी किया मैंने
अपने लहू से खुद अपना खून खरीदा है मैंने

मायने गैरत के तो मैं भी खूब समझता हूं मगर
जिंदा रहने को कहीं थूक कर भी चाटा है मैंने

ईमान से बड़ा धर्म नहीं यही सच जाना था मैंने
बेईमानी से जंग में है ईमान सब खर्च दिया मैंने

जहां में इस कदर हर रोज़ भेष बदले है मैंने
आज याद ही नहीं क्या आया था असल पहने

बगुले भगत -2.0

तजुर्बा समझने का तजुर्बा नहीं है जिनको
मेरे तजुर्बे का आज मोल लगाना है उनको

सींच जिस पोधो को कल दरख़्त किया हमने
फल आज उन्ही शजर के हमे खूब बेचे उसने

किसी के ग़म में ना भीगी कभी पलके जिनकी
प्यास रेत की समझने की आज ज़िद है उनकी

आज यहाँ तो कल वहाँ रहे है ठिकाने जिनके
मेरे मुस्तकीन मकां के वो गिन रहे है तिनके

हक़ अता ना करना आज मजबूरी है ज़िनकी
क्या कहे जी हज़ूरी दूर तलक मशहूर है इनकी

अपने अख़लाक़ के ढोल खूब पीटे है जिसने
गर्दिश में मजलूम को बहुत सताया है उसने

मुझे हराने का सरेआम दावा किया है जिसने
गले लगा कर छुरा पीठ में उतारा है उसने

उलझन

खुशियां तो खरीद लाया हूँ बाजार से
कोई बता दे तनहा इन्हें मनाऊ कैसे

अपने दिल के घाव मैं छुपाऊं कैसे
रूठा बैठा है यार इसे मनाऊं कैसे

रहमदिली दिखावा नहीं शौक है मेरा
वो रोज़ नश्तर चुभोता है निभाऊ कैसे

होश में हमेशा सच ही बोलता हूं मैं
नशे में उसे कुछ और बताऊं कैसे

जिंदा है मैं और मेरा ज़मीर हम दोनों
क्यों ना मार पाए वो ,मैं बताऊं कैसे

खुद को बरी समझता है उसे क्या मालूम
मेरी अना रखी ज़मानत में उसे बताऊ कैसे

उसे मेरे सुकून ना दुख से रहा राबता कोई
ऐसे बिखेरे मेरे जज्बात इन्हें सम्भालू कैसे

भूल गया

उसने समझाया मुझे हमेशा खुश रहा करो
मैंने समझा भी फिर मैं जाने कैसे भूल गया

कहा गया मुझसे सोच समझ कर दोस्त बनाना
मैंने मान भी लिया फिर मैं जाने कैसे भूल गया

समझाया किसी को मुक़द्दस जहां नहीं मिलता
सुना सोचा समझा फिर मैं जाने कैसे भूल गया

किया गया ख़बरदार भलाई का जमाना नहीं यार
पुरे होश में सुना मैंने, फिर मैं जाने कैसे भूल गया

टके टके पर आज तो ज़मीर है बिकता सुना मैंने
अपना ज़मीर टटोला फिर मैं जाने कैसे भूल गया

खबर पक्की मिली थी इश्क आज का दरिया है
किनारे तक याद था फिर मैं जाने कैसे भूल गया

दिल दुखाने वालों को अब और न बख्शा जाएगा
रात तलक था याद मुझे सुबह जाने कैसे भूल गया

अमृत अवतार बागबान फ़िल्में सभी देखी है मैंने
कुछ दिन तक याद थी फिर जाने कैसे भूल गया

दरियादिली गुनाह है अब और ये गुनाह नहीं होगा
आज फिर मैं तफ्तीश में हूं मैं ये जाने कैसे भूल गया

एतबार

तुम हमें कही यूं गिरा ना पाओगे
यारों का ऐतबार कमाया है हमने

मोहब्बत हमें तो बड़ी रास आ रही है
महबूब का ऐतबार कमाया है हमने

वह बच्चा घंटों हमारे घर में रहता है
पड़ोसी का ऐतबार कमाया है हमने

ढूंढते मजलूम चले आते हैं हमको
खुदा का ऐतबार कमाया है हमने

चमन के हर कूचे में पहोच है हमारी
बागबान का ऐतबार कमाया है हमने

कच्चे धागे से उड़ाते हैं हौसलों की पतंग
हवा का कितना ऐतबार कमाया है हमने

हैसियत यूं ही नहीं जानी जाती हमारी
रकीबों का भी ऐतबार कमाया है हमने

हमारी छत को ढूँढते परिंदे चले आते हैं
परिंदो का ऐसा प्यार कमाया है हमने

झंझट

मोहब्बत तो बस अब खुद ही से करूंगा
ना वफा की कोई आरजू न जफा की झंझट

अपनी उम्मीदे अब खुद ही से पूरी करूँगा
ना आसरे की आरजू ना दिल जलाने की झंझट

अब दुआ किसी गैर के लिए मैं ना मांगूंगा
न शुक्रिया की हसरत ना एहसान का झंझट

कभी आंसू बहा लूंगा कभी अश्क पी जाऊंगा
ना तसल्ली की आरजू ना दिल के दौरे की झंझट

खुद अपनी शिकायत खुद ही से करूंगा
ना गवाह की आरजू न दलीलों की झंझट

तू करम का सिला दे मेरे जीते जी मौला
ना जन्नत की हसरत ना दोज़ख़ की झंझट

ढूंढ लेता हूं ख़ुद ही में मंदिर और मस्जिद
ना तोड़ने की आरजू ना बनाने की झंझट

मेरी अज़ीज़ नज़्मे अतिन ख़ुद ही से कहूँगा
ना मुक़र्रर की आरजू न जाया होने का झंझट

खलनायक

भाई के हक पर नियत खराब हो रही है मेरी
भीतर जरूर कहीं दुर्योधन पल रहा है कोई

बदले की आग में घर जले जा रहा है मेरा
भीतर ज़रूर कहीं रावण पनप रहा है कोई

निर्लज होकर निर्लज हुकुम बजा रहा हूं मैं
भीतर ज़रूर कहीं दुशासन घर किए हैं कोई

उजड़ा घर मेरा किसी गैर की बदौलत नहीं
अपना भी तो विभीषण काम कर रहा है कहीं

लो अब जान ही लो कामयाबी का राज़ मेरी
नए जयचंदों से हमेशा होशियार रहा हूं कहीं

वो धृतराष्ट्र तो अंधा था जो हुआ बड़ा बदनाम है
यह आंखों वाले कौन है जो इन दिनों मशहूर है

वो शकुनी और उसकी चालें सब पुराने किस्से हैं
कहीं छोटा तो कहीं बड़ा, यह रोज हमारे हिस्से हैं

रिश्तो की लड़िया

सुकून के उन पुराने सुनहरी दिनों की याद आयी
याद आयी, तो रिश्तों की महकती माला याद आयी

याद आई तो आँख भर आयी
भर आयी आँख
तो बहा दिए आंसू
आंसू बहे
बह गया पानी
पानी बहा, तो प्यास लगी
प्यास लगी तो हूक उठी
हूक उठी, फिर मिलने की
महकती उस माला की
बिखरी लड़ियो से मिलना था

मिलना था तो खोज हुई
लड़ियो सभी का मिल जाना
सच में बड़ा मुहाल हुआ

खोज हुई मिली लड़ियां
अब जिम्मेदारी मेरी थी

जोड़ के लड़ियो को फिर से
माला में महक जगानी थी

आसान मगर यह काम न था
समेटना इन्हें आसान न था
बरसो की बिछड़ी थी लड़िया
पिरोना इन्हें ऐसाआसान न था

समय के अंजान थपेड़ो ने
कुछ मेरे, तो कुछ लड़ियो के
आकार विचार बदल डाले

कुछ छोर ढूंढने मुश्किल थे
कुछ सिरे जोड़ने मुश्किल थे
हूक मगर गुंथे जाने की
दोनों और बराबर थी

कुछ बातें बिसार दी हमने
कुछ दिल को बड़ा किया हमने
रिश्तो के महकती माला के
हम सब फिर किरदार हुए
कल सुनहरी कल के लिए जो छूटी थी
वह माला सुनहरी आज हुई
वह माला सुनहरी आज हुई

खुशी

रंग रंग के लोग यहां
जुदा है खुशी के रंग

कोई कामयाब हो कर खुश
कोई कामयाब करके खुश

कोई किसी को उठाकर खुश
कोई किसी को गिरा के खुश

रंग रंग के लोग यहां
जुदा है खुशी के रंग

कोई दौलत कमा के खुश
कोई इज्जत कमा के खुश
कोई खुशी बाट के खुश
कोई खुशी बटोर कर खुश
कोई सबको हंसा के खुश
कोई रुला धुला के खुश
रंग रंग के लोग यहां
जुदा है खुशी के रंग

कोई दिल लगाकर खुश
कोई दिल जला कर खुश
कोई इश्क लड़ा कर खुश
कोई अखियां लड़ा के खुश
कोई वादे गिना कर ख़ुश
कोई वादे निभा के ख़ुश
रंग रंग के लोग यहां
जुदा है खुशी के रंग

कोई मेल कराकर खुश
कोई झगडे लगाकर खुश
कोई है लूट लूट कर खुश
कोई सब कुछ लूटा के खुश
कोई रक्त बहा कर ख़ुश
कोई जान बचाकर खुश
रंग रंग के लोग यहां
जुदा है खुशी के रंग

कोई राज कर के खुश
कोई राजा बना के खुश
कोई वतन बेचकर खुश
कोई वतन परस्ती से खुश
कोई माफ कर के खुश

कोई साफ कर के खुश

कोई सुर के नशे में खुश

कुछ सूरा के नशे में खुश

रंग रंग के लोग यहां

जुदा है खुशी के रंग

कोई पिंजरे बनाकर खुश

कोई पंछी उड़ाकर खुश

कोई ईमान दिखा के खुश

कोई ईमान निभा के खुश

कोई खुद के भरोसे खुश

कोई खुदा के भरोसे खुश

कोई गुलशन खिला के खुश

कुछ जंगल उजाड़ के खुश

कोई औकात में रखकर खुश

कोई औकात दिखा कर खुश

रंग रंग के लोग यहां

जुदा है खुशी के रंग

चक्कर

खुद को तो पहले जरा समझ ले तू
छोड़ सबको समझ लेने का चक्कर

मोहब्बत खुद अपनी सलाहियतों से कर
छोड़ खुद खामिया गिनवाने का चक्कर

गैरों से प्यार जता कर तू देख तो सही
छोड़ ये अपनों से गिड़गिड़ाने का चक्कर

तू सबसे हसीन है तू यह मान तो सही
छोड़ ये रोज लाली लगाने का चक्कर

लायक नहीं था तेरे जो तुझे नहीं मिला
छोड़ ये शिकवे शिकायत का चक्कर

हूआ है इश्क तो खुलकर मैदान में आ
छोड़ ये सबसे छुपने छुपाने का चक्कर

वह तुझे पसंद है तो उसके मुंह पर कह दे
छोड़ इशारे इशारे में शेर सुनाने का चक्कर

सवरना है तो जहां की नजर में सँवर
छोड़ रोज़ आईने में तकने का चक्कर

कुछ घड़ी को तो खुद से भी मिलाकर
छोड़ ये झूठी मसरूफियत का चक्कर

कुछ दिल को कहीं छू जाए तो वहीं दाद दो
छोड़ो ये आखिर में ताली बजाने का चक्कर

कभी करो सफाई तो नियत साफ कर लेना
छोड़ो यह बेकार चोरी चकारी का चक्कर

होश ही खोना है तो बोतल को मुंह से लगा
छोड़ भी ये पटियाला वटियाला का चक्कर

बरकत बड़ी बेहिसाब है ईमान में यारा
छोड़ भी ये ख़ुद से दगाबाजी का चक्कर

वजह क्यों चाहिए हंसने हंसाने के लिए
चल छोड़ भी ये रोने रुलाने का चक्कर

दायरा मोहब्बतों का खूब बढ़ाओ यारों
छोड़ो भी यह झूठी सरहदों का चक्कर

अभी मजा आ रहा है तो खींच के मजा ले लो
छोड़ो भी यह गमों से लिपटने का चक्कर

तू खुदा का बंदा है तो इनायत जरूर बरसेगी
छोड़ भी ये रोज मुरादे गिनवाने का चक्कर

आओ इसी जहां को आज बना ले हम जन्नत
छोड़ो भी मर कर जन्नत में जाने का चक्कर

उन्हें लो साथ जो दिल से जुड़े सफर में तेरे
छोड़ ये रुक कर सवारी बुलाने का चक्कर

गर बढ़ा सके तो ख़ुद की कीमत बड़ा
अब छोड़ ये मुझे खरीद लेने का चक्कर

पहचान

गुजरा जमाने से जो अपनी पहचान बनाने
पहचान मुझे इस सारे जमाने की हो गई

औक़ात मेरी मुझे जो आईना दिखाता है
सामने से जो हटा तस्वीर खाली हो गयी

वजूद को जिनके कोई मानता तक नहीं
वो कहते है ज़माने से पहचान है उनकी

उनकी पहचान का कोई हमको मिला था
हमने पूछा नहीं था जो भी उसने बताया

मुश्किल हुए हालात तो टूटने लगी हिम्मत
फ़िक्र क्या दोस्तों से क़ायम पहचान है मेरी

मुफलिसी में कहां सब कुछ खो दिया मैंने
रिश्तों की तफ़सील से पहचान हो गई मेरी

जब खोजने चला मैं उनकी बेरुख़ी का सबब
नये यार की उनके हमसे थी पहचान पुरानी

खुदा ने ख्वाब में पूछा बता क्या मांगता है तू
जब टूटा ख्वाब तो मुझी से पहचान हो गई मेरी

अमली अवतार

जहां तक भीड़ है वहीं तक देखता हूं मैं
खाली मैदान नाहक उम्मीदें जगा देते हैं

भीड़ की आवाज में आवाज मिला देता हूं मैं
दिल की आवाज नाहक इंसानियत देती हैं

हर झूठे सच को बार-बार सच बोलता हूं मैं
कड़वी ये हक़ीक़त मेरी दुकान चला देती है

बांधकर पट्टी आँख पर देखाअनदेखा कर जाता हूं
दानिस्ता औढ़ा अंधेरा तो मेरा घर रोशन रह जाता है

पानी की स्याही से हकीकत बयां करता हूं मैं
जान भी छूट जाती है इमान भी बच जाता है

कुत्तों के ऊंचे शोर को दहाड़ मान लेता हूं मैं
हो कुत्ते मेहरबान तो शहर में रहने मिल जाता है

जैसा जिस दिन जो कहें पूजा वैसे कर लेता हूं मैं
ऊपर वाला तो अपना है,रहनुमा खुश हो जाता है

भीड़ की आवाज में आवाज मिला देता हूं मैं
दिल की आवाज नाहक इंसानियत जगा देती है

जानवर और इंसान - आज और कल

इंसानों का रुतबा देखे ,क्या खूब तरक्की कर गए
जानवरों का वही सिलसिला, जहां के तहां रह गए

गैरों से आगे बढ़ इंसा अपनों से धोखा कर गए
कुत्ते आदतन वही वफादार, वफादार ही रह गए

हम खुलेआम बगल में छुपके छुरी रखने लग गए
तोते कल भी आज भी बस राम राम रटते रह गए

हम बगुले भक्तों को देखो ,हर कूचे में फैल गए
वो बगुले ग़ैरतदार है तो दरिया किनारे रह गए

पल-पल में इंसा को देखो रंग बदलते हो गए
काव काव करते ये कौवे काले के काले रह गए

ओढ़े खाल शेर की अब जब गीदड़ गुर्राते हो गए
शेर बैठे पिंजरे में ,क्या करते? बस सुस्ताने लग गए

जिसको जहां मौका मिला वहीं से वो झपट गया
बाज़ बेचारा दौ जून का दाना ढूंढता रह गया

धीरे-धीरे हम इंसा को इतना जहर उगलना आ गया
सांप बेचारा ,बिल में चूहों के ,घर तलाशता रह गया

मुश्तकिर कुनबे तोड़कर हमको तो मजा आ गया
हंस कल भी आज भी बस साथ निभाता रह गया

कुछ गधों को घोड़ो की सवारी करना आ गया
बोझ उठाने वाला तो गधा ही कहलाता रह गया

है मौका परस्ती आसरा हम ऐसे इंसान हो गए
आंख कान और मुंह पर बंदर हाथ धरे ही रह गए

इंसानों के क्या कहने अपनी जात को जिंदा नोच गए
गिद्ध तो कल भी आज भी शवों को नोचते रह गए

इंसानों का रुतबा देखे , क्या खूब तरक्की कर गए
जानवरों का वही सिलसिला, जहां के तहां रह गए

पंगा @ 100%

वैसे तो सब चंगा है

ऐसे थोड़ा पंगा है

24 घंटे लाइफ में सबकी

Individual दंगा है

अपनी अपनी डफली सब की

अपनी अपनी बीन है

अपनी अपनी destini

अपना अपना सीन है

फिटनेस का लेवल तो देखो

Democracy Trim है

Out of box जरा बोले वो

Individual screem है

बिन पर झूमे भैंस यहां तो

ढोल पर नाचे सांप है

कौन मदारी कौन सपेरा

बदले सबके भेष है

घटिया सब है बढ़िया-बढ़िया

बढ़िया बांधे पुड़िया है

वैसे तो सब चंगा है

ऐसे थोड़ा पंगा है
24 घंटे लाइफ में सबकी
Individual पंगा है

मेरा मुंसिफ मेरा आका
हुकम सुनाएं खास ये
हाथ पैर को बांध के बोले
जितना चाहे नाच ले
मुंह पर टेप लगाकर पूछे
हुआ कही कोई रेप है?
जिसकी लाठी मोटी निकले
हुए उसी के खेत है
वैसे तो सब चंगा है
ऐसे थोड़ा पंगा है

लाइफ में रोज का नया सियापा
कहीं पर बर्गर कहीं पर फाका
किसी का किसी से भिड़ा दे टांका
किसी का किसी से तूड़ा दे नाता
सिस्टम है कि साकी नाका
साकी नाका, साकी नाका
कंफ्यूजन है गहरा पापा
क्या जुमला क्या सच्चा पापा

ऐसा गुगली फेंका पासा

पल में तौला पल में मासा

मिलियन डॉलर question पापा

किसने किसको कैसे फांसा

वैसे तो सब चंगा है

ऐसे थोड़ा पंगा है; पंगा है

तलाश

जिसे जरूरत मेरी होगी, वो तो मुझे खोज ही लेगा
पूरी करेगा जो मेरी जरुरत ,वो तो मुझमें रहता ही है

खुशबु के दीवाने है जो कोई इत्र तो चुन ही लेंगे
मै इस पर बेफिक्रा हूँ वो तो रूह में रहती ही है

गर्दिश में तारे होंगे तो, वो कोई खुदा तो चुन ही लेंगे
हम रब के बाशिंदे है, कुछ ना कुछ तो कर ही लेंगे

हुई ख़ता कहीं इनसे, इल्ज़ाम किसी पे धर ही देंगे
ऐसा कोई काम पड़ा तो, मुझे कहीं से ढूँड ही लेंगे

जिन्हें छोड़कर जाना होगा , कोई बहाना कर ही लेंगे
मेरी छोड़ो, मेरी फ़ितरत सबको अपना कर ही लेंगे

जिनके सर आसमा पर ख़ास भला वो क्या कर लेंगे
ऊँची सोच पैर जमीं पर,मुश्किल क्या है उड़ ही लेंगे

कायराना मिजाज है वो, चाक जिगर को कर ही देंगे
शायराना तबीयत अपनी, रफू सही से कर ही देंगे …

चौबीस- पच्चीस (नया साल)

लो वो जा रहा चौबीस, वो आ रहा पच्चीस

याद करे ख़ुशी के लम्हे, गहरी आँखे मिच

वो लम्हे भी याद रह, जो दे गए गहरी सीख

लो वो जा रहा चौबीस, वो आ रहा पच्चीस

रेत सी फिसली जाए ज़िंदगी,जितनी मुट्ठी चाहे भीच

ख़ुशी, स्वास का बीज है प्यारे,सींच सके तो सींच

लो वो जा रहा चौबीस, वो आ रहा पच्चीस

कुछ न कुछ तो छूटेगा ही

कोई न कोई तो रूठेगा ही

जोड़ लगाने की कोशिश में

कुछ न कुछ तो

बिखरेगा ही

शीशे की सी इस दुनिया में

रोज़ कहीं कुछ टूटेगा ही

वक़्त का पहिया यू ही चलेगा

उम्र जाएगी बीत

नशा ख़ास है , ये ज़िंदगी

इसे हौले हौले खींच

खाली हाथ तुझे जाना है ,

चाहे जितनी मुट्ठी भींच

लो वो जा रहा चौबीस, वो आ रहा पच्चीस

जब तलक, तब तलक

धड़कनों को जरा आसान छोड़ते हैं
जिंदगी में जरा मजा जोड़ते हैं

राहें आसान जब होगी तब होगी
पुरखार राहों का मजा लूटते हैं

इंतजा उस तक पहुंचे जब तलक
मुख्तलिक राहें आजमाएं तब तलक

वह मसरूफ है दुआ क़बूले जब तलक
ख़ुदाई खुद मे ही जगाये तब तलक

न झलके खुदा का नूर हमसे जब तलक
तराशा जाय अपना मयार तब तलक

अपने मजहब को समझे जब तलक
इंसानियत का मजा ले ले तब तलक

पैगामे इश्क का जवाब आए जब तलक
देखते रहो इंतजाम और भी तब तलक

वो जाहिर करे तुम्हारा नाम जब तलक
तुम खारिज करो बकाया नाम तब तलक

बेअसर है सुरुरे मय भी तब तलक
वह आंखों से ना पिलाए जब तलक

उससे मिले ना थे अतिन तुम जब तलक
फ़िज़ा में इत्र ही महकता था तब तलक

बारिश का इंतजार ,बस जब तलक
वो जुल्फ लहराये दे,बस तब तलक

वफा से हमें इंकार नहीं , तब तलक
दोनों और से निभाई जाये जब तलक

गाना सीख न ले आप जब तलक
कुछ सुरीला सुना जाये तब तलक

हम संवारे अपना आज ,जब तलक
हर दिन लगे मानों त्यौहार ,तब तलक

जाती सांस ,रुक ना जाए जब तलक
आती हर सांस का मजा ले तब तलक

गमें गैर से ना भीगे तेरी पलके जब तलक
खुद को इंसान ना समझ लेना तब तलक

करते रहोगे सवाब के काम जब तलक
खुदा रखेगा तुम्हारा हिसाब तब तलक

इंसा में बाकी है नादानी जब तलक
कारोबार सभी का चलेगा तब तलक

दाद भरपूर ना मिलेगी जब तलक
शेर दर शेर सुनाऊंगा तब तलक

धड़कनों को जरा आसान छोड़ते हैं
जिंदगी में जरा मजा जोड़ते हैं

राहें आसान होगी तब होगी
पुरखार रास्तों का मजा लूटते हैं...

खरा खरा

खरा उतरने को मैं किसी पैमाने का मोहताज नहीं
जब गर्दिश में हो यार मेरा फिर मेरे जैसा यार नहीं

ऐसा नहीं , कभी होता हमसे इंतजार नहीं
ऐसा है ,कभी कहीं रहे इतने बेकरार नहीं

ये जवानी अपनी किसी जागीर से कम नहीं
मैं आशिक़ हूँ,किसी जमींदार से कम नहीं

उसने ना ही कहा था मैंने सुना था सही सही
कैसे इश्क हो गया, उसके कहते नहीं नहीं

कौन कहता है ठहरे पानी का रूआब नहीं
गहरा डुबोयेगा ,इसके चेहरे पर नकाब सही

इंसान एक मिजाज के हुआ करते नहीं
अब हर फूल के तो इत्र हुआ करते नहीं

रह नेकदिल नेकी दरिया में डाल कही
अब हर सवाब के तो होते इनामात नहीं

फूलों सी हुआ करती हर एक की सीरत नहीं
कांटे भी जरूरी है ,देने को नसीहत ही सही

ऐसा नहीं गमों से ,रही मेरी कोई पहचान नहीं

मेरी असबतो के सदके,हमारी कभी बनी नहीं

खरा उतरने को ,मैं किसी पैमाने का मोहताज नहीं

जब गर्दिश में हो यार मेरा फिर मेरे जैसा यार नहीं

शौक़

रिश्ते निभाने का ऐसा शौक़ हूँ रखता
टूटे कभी जो दिल शिकायत नहीं करता

इबादत को सबसे ज़रूरी हूँ रखता
ख़ुदा को मगर मसरूफ नहीं रखता

यारी निभाने का ऐसा शौक़ हूँ रखता
हिसाब की कोई किताब नहीं रखता

आशिक़ मिज़ाज हूँ, आशिक़ी का शौक़ रखता
माशूका मगर मैं एक से ज्यादा नहीं रखता

दिल में मेरे जो हैं , मैं वही ज़ुबा पे रखता
छुरी कभी कोई मैं बग़ल में नहीं रखता

ख़ुशमिज़ाज हूँ, मैं होंठों पर हँसी रखता
मज़लूम से मीलू तो आँखो में पानी रखता

शायरी का शौक़ हैं, शायरी हूँ क़रता
नज़्म कभी बहरों पर ज़ाया नहीं क़रता

तेरी मोहब्बत

तेरी मोहब्बत ने मुझे वो हुनर दिया है
लम्हों में मैंने ज़िंदगी का सफ़र किया है

तेरी मोहब्बत ने मुझे यूँ सवार दिया है
आशिकों में सबसे आला मयार दिया है

तेरी मोहब्बत ने मुझे वो नज़रिया दिया है
गले लगाकर रक़ीब को हबीब किया है

तेरी मोहब्बत ने मुझे वो मक़ाम दिया है
जलते चराग़ से मुझे आफ़ताब किया है

तेरी मोहब्बत ने मुझे वो ओहदा दिया है
मजनूँ ने सरे आम मुझे सज़दा किया है

तेरी मोहब्बत ने मुझे ऐसा जलाल किया है
जिस फ़न पर हाथ रखा, बस कमाल किया है

तेरी मोहब्बत ने शायरी में वो असर किया है
हर मिसरे को एक मुकम्मल गज़ल किया है

नया मैं

कांटे जो कल तक रास्ते रोकते थे मेरा
फूल बनके वह खिले हैं ये माजरा क्या है

कल माझी के सहारे की नहरे पार मैंने
अब दरिया लगे समंदर यह माजरा क्या है

कल ताक पर चढ़ी थी आरजू तमाम मेरी
मचलती नई ये हसरतें यह माजरा क्या है

मलंग हो चला था कल तो यह दिल भी मेरा
फिर रोमानी हुई तबीयत यह माजरा क्या है

सूरत शकल की मेरी होश कहा था मेरा
धुंधला लगे है आईना यह माजरा क्या है

चमन के हर एक गुल से टूटा था नाता मेरा
खिले कलियां मेरी नजर से यह माजरा क्या है

सलाहियतों पर मेरी खुद शक होने लगा था मेरा
आज फिर छाने लगा फिजा यह माजरा क्या है

मंजिल थी दूर न सफ़र का कोई ठिकाना मेरा
आज हद में लगे है आसमान यह माजरा क्या है

बैठे किनारे दरिया के दूर लहरें देखी थी मैंने
आज खुद में एक तूफान हूं ये माजरा क्या है

कल गिनती में कहीं किसी की नहीं था मैं
है पीछे हुजूम मेरे अब ये माजरा क्या है

भगवान के भरोसे बेसुध पड़ा था मैं तो
उसके बंदे ने जगाया कुल माजरा यह है

कुल माजरा यह है

आभार

प्रिय पाठक गण,

मैं दिल से आप का आभारी हूँ जो आपने मेरी रचनाओं को पढ़ने का समय निकाला, और ये मेरी दिली ख्वाइश है की कृपया मुझे मेरी जो भी रचना आप के दिल को छू गयी हो तो ज़रूर बताये,कुछ कमियां बताये तो इसका और भी स्वागत है क्युकी अभी आपके इस शायर मित्र की लिखने की प्यास जस की तस बनी हुई है और आगे का सफर हालात के साथ और मित्रो के प्यार और राय की छाँव में चलेगा.......

अंत मैं करबद्ध हो दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ अन्तरराष्ट्रीय कवयित्री अनामिका जैन 'अम्बर" जी, क्रन्तिकारी कवी श्री सौरभ जैन जी और मशहूर शायर जनाब आरिफ शेख साहेब का जिन्होंने मेरी हौसला आफजाई में अपने व्यस्त समय से कुछ वक़्त निकाला और आशीर्वचन, शुभकामनाये,मार्गदर्शन से मेरी इस यात्रा को ईंधन दिया।

रतलाम के मशहूर कवी और मेरे अनुज, प्रतिक दवे का अनवरत साथ विशेष उल्लेख का पात्र है

आपका अपना अतिन विजय